सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2022 का द्वादश अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् प्रो. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा द्वारा लिखित 'श्रीकृष्णप्रोक्ता गीताचतुष्टयी में सार्वकालिक नैतिक चिन्तन' शोधलेख में श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेशों की व्यावहारिक उपयोगिता एवं तत्त्वज्ञान में महत्ता के साथ ज्ञान एवं कर्म के विषय का तुलनात्मक प्रतिपादन किया गया है।

गोपीनाथ पारीक द्वारा लिखित 'एक सरस भक्तिकाव्य 'राधामाधवगीताञ्जलि'' लेख में राधा कृष्ण की लीलाओं लिखे गये उक्त ग्रन्थ के गीतों के आधार पर लीला के माहात्म्य का प्रस्तुतीकरण किया गया है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा